

राजस्थान भूगोल

Geography of Rajasthan



**NEW INDIA
EDUCATION (NIEd)**

— संकल्प आपका, साथ हमारा —

राजस्थान भूगोल

— GEOGRAPHY OF RAJASTHAN —

• संपूर्ण कवरेज • सरल भाषा • परीक्षा उपयोगी •

- 01 स्थिति, विस्तार एवं भौतिक स्वरूप
(Location, Extent & Physiography)
- 02 नदियाँ एवं झीलें (Rivers & Lakes)
- 03 जलवायु (Climate)
- 04 वनस्पति, वन्यजीव एवं जैव विविधता
(Vegetation, Wildlife & Biodiversity)
- 05 मृदा (Soil)
- 06 कृषि (Agriculture)
- 07 पशुधन (Livestock)
- 08 सिंचाई (Irrigation)
- 09 जनसंख्या (Population)
- 10 शहरीकरण (Urbanization)
- 11 जनजातियाँ (Tribes)
- 12 खनिज संसाधन (Mineral Resources)
- 13 जियो-हेरिटेज एवं जियो-पार्क (Geo-heritage & Geoparks)

★ EXAMS ★



RAS PRELIMS



RAS MAINS



REET



VDO



LDC / Clerk



Police / SI



CET



Other Competitive Exams



By
OMKAR SIR



सरल भाषा में
संपूर्ण कवरेज



परीक्षा की दृष्टि से
महत्वपूर्ण बिंदु



चार्ट, मैप और
डाटाग्राफ सहित



पूर्व परीक्षा प्रश्न
समाहित



सभी प्रतियोगी
परीक्षाओं के लिए
उपयोगी

★ ★ ★
COMPLETE
STUDY MATERIAL
FOR YOUR
SUCCESS

★ क्या आप जानते हैं?

ज़रा सोचिए — किसी भी भव्य इमारत को खड़ा करने से पहले सबसे पहला काम क्या होता है? नींव (Foundation) डालना। बिना मज़बूत नींव के चाहे कितनी भी सुंदर दीवारें व छत बना ली जाएँ, इमारत टिक नहीं पाती। ठीक इसी तरह, राजस्थान के भूगोल जैसे विशाल व विस्तृत विषय को पढ़ने से पहले भी एक मज़बूत 'नींव' चाहिए — यानी यह स्पष्ट समझ कि आखिर पढ़ना क्या है, किस क्रम में पढ़ना है, और परीक्षा में इसका कितना व कैसे उपयोग होगा। बहुत से विद्यार्थी सीधे 'नदियाँ', 'जलवायु' या 'खनिज' जैसे अध्यायों में कूद पड़ते हैं, बिना यह जाने कि ये सभी टुकड़े आपस में कैसे जुड़े हैं — नतीजा यह होता है कि जानकारी याद तो रहती है, लेकिन बिखरी-बिखरी सी, जैसे बिना डोरी के मोती। यह 'अध्याय 0' उसी डोरी का काम करेगा — यह आपको बताएगा कि यह पूरी पुस्तक किस उद्देश्य से बनी है, RAS से लेकर पटवारी तक हर परीक्षा में राजस्थान भूगोल का पाठ्यक्रम वास्तव में क्या कहता है, और 14 अध्यायों का यह सफ़र किस तार्किक क्रम में तय करना सबसे फ़ायदेमंद रहेगा। याद रखिए — 'पिछले 8 सालों से Rajasthan GK पढ़ाने वाले सबसे Trusted Teacher — 6 लाख+ Students' के अनुभव से यह पुस्तक बनाई गई है, इसलिए इसे ध्यान से समझें, फिर आगे बढ़ें।

इस पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक 'राजस्थान का भूगोल' विषय पर 14 विस्तृत अध्यायों में तैयार की गई एक सम्पूर्ण, स्व-व्याख्यात्मक (Self-Explanatory) पुस्तक है, जिसे विशेष रूप से RAS Pre व Mains, SI, REET, CET, VDO, Patwari सहित राजस्थान की लगभग सभी प्रमुख प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार किया गया है। इसे इस तरह डिज़ाइन किया गया है कि कोई भी 18 वर्ष का विद्यार्थी इसे स्वयं पढ़कर पूरी तरह समझ सके — हर जटिल अवधारणा को सरल हिंदी में, उदाहरण सहित एवं कहानी-शैली में समझाया गया है।

हमारी पुस्तक का 14-अध्याय अध्ययन क्रम

नीचे दिया गया क्रम कोई मनमाना क्रम नहीं है — यह इस तरह बनाया गया है कि हर अगला अध्याय पिछले अध्याय की समझ पर आधारित हो (Logical Flow), ताकि ज्ञान टुकड़ों में नहीं बल्कि एक जुड़ी हुई शृंखला के रूप में बने।

01

स्थिति, विस्तार एवं भौतिक स्वरूप (Location, Extent & Physiography)

फोकस: सबसे पहले राज्य की भौगोलिक स्थिति, सीमाएँ व पाँच भौतिक विभाग समझे जाते हैं — यह पूरी पुस्तक की आधारभूत नींव है, क्योंकि आगे के लगभग सभी अध्याय (नदियाँ, जलवायु, मृदा आदि) इसी भौतिक ढाँचे पर निर्भर करते हैं।

02

अपवाह तंत्र — नदियाँ एवं झीलें (Rivers & Lakes)

फोकस: भौतिक स्वरूप समझने के बाद स्वाभाविक अगला कदम यह जानना है कि पानी इस धरातल पर कैसे बहता है — नदी-तंत्र व झीलें, जो सिंचाई (अध्याय 8) व जल-संसाधनों की नींव हैं।

03

जलवायु एवं जलवायु वर्गीकरण (Climate & Classification)

फोकस: भौतिक स्वरूप व जल-तंत्र के बाद जलवायु को समझना तर्कसंगत है, क्योंकि जलवायु ही वनस्पति (अध्याय 4), मृदा (अध्याय 5) व कृषि (अध्याय 6) तीनों को सीधे प्रभावित करती है।

04

प्राकृतिक वनस्पति, वन्यजीव एवं जैव विविधता संरक्षण (Vegetation, Wildlife & Biodiversity)

फोकस: जलवायु के प्रभाव से बनने वाली वनस्पति व उस पर निर्भर वन्यजीव — यह अध्याय पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) की समझ बनाता है, जो पर्यटन (अध्याय 14) से भी जुड़ता है।

05

मृदा संसाधन (Soil Resources)

फोकस: जलवायु व वनस्पति द्वारा प्रभावित मृदा के प्रकार व संरक्षण — यह सीधे अगले अध्याय (कृषि) की नींव बनाता है, क्योंकि कृषि मृदा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

06

कृषि — प्रमुख फसलें, उत्पादन एवं वितरण (Agriculture: Major Crops)

फोकस: मृदा व जलवायु दोनों की समझ के बाद कृषि स्वाभाविक अगला अध्याय है — फसलें, कृषि-जलवायु प्रदेश व संबंधित योजनाएँ, जो पशुधन (अध्याय 7) व सिंचाई (अध्याय 8) से गहराई से जुड़ी हैं।

07

पशुधन (Livestock)

फोकस: कृषि-आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था का दूसरा स्तंभ — पशुधन गणना, प्रमुख पशु-प्रजातियाँ व डेयरी विकास, जो कृषि (अध्याय 6) का स्वाभाविक विस्तार है।

08

सिंचाई (Irrigation)

फोकस: नदियों (अध्याय 2) व कृषि (अध्याय 6) दोनों की समझ के बाद सिंचाई के साधनों व परियोजनाओं (जैसे इंदिरा गांधी नहर) को समझना तार्किक रूप से पूर्ण होता है।

09

जनसंख्या — वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात (Population)

फोकस: भौतिक व आर्थिक आधार (अध्याय 1-8) समझने के बाद अब मानवीय पक्ष की शुरुआत — जनसंख्या के आँकड़े आगे के सामाजिक अध्यायों (शहरीकरण, जनजातियाँ) की नींव हैं।

10

शहरीकरण (Urbanization)

फोकस: जनसंख्या के वितरण को समझने के बाद उसका शहरी स्वरूप — नगरीय विकास, ULB वर्गीकरण व स्मार्ट सिटी जैसी योजनाएँ स्वाभाविक अगला विषय बनती हैं।

11

जनजातियाँ (Tribes)

फोकस: शहरी जनसंख्या के विपरीत ध्रुव — राज्य की जनजातीय आबादी, उनकी संस्कृति व कल्याण योजनाएँ, जो पर्यटन (अध्याय 14) के जनजातीय सर्किट से भी जुड़ती हैं।

12

खनिज संसाधन — धात्विक एवं अधात्विक (Minerals: Metallic & Non-Metallic)

फोकस: मानवीय पक्ष के बाद पुनः प्राकृतिक संसाधनों की ओर — खनिज संपदा, जो राज्य की औद्योगिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ है व अगले अध्याय (भू-धरोहर) से सीधे जुड़ती है।

13

जियो-हेरिटेज एवं जियो-पार्क (Geo-heritage & Geoparks)

फोकस: खनिज अध्याय का वैज्ञानिक विस्तार — GSI द्वारा घोषित भूवैज्ञानिक धरोहर स्थल, जो परीक्षा पाठ्यक्रम में स्पष्ट उल्लेख न होने पर भी वर्तमान परीक्षाओं में करेंट अफेयर्स व उन्नत प्रश्नों के रूप में पूछे जाते हैं (अतिरिक्त/बोनस अध्याय)।

14

पर्यटन (Tourism)

फोकस: सबसे अंतिम व समेकित (Integrated) अध्याय — यह पिछले सभी अध्यायों (भौतिक स्वरूप, नदियाँ, वन्यजीव, जनजातियाँ, भू-धरोहर) के व्यावहारिक व आर्थिक उपयोग को एक साथ दिखाता है, इसलिए इसे सबसे अंत में रखा गया है।

अध्ययन रणनीति — यह पुस्तक कैसे पढ़ें

1. क्रमानुसार पढ़ें: अध्याय 1 से 14 तक इसी क्रम में पढ़ना सबसे प्रभावी है, क्योंकि हर अध्याय पिछले पर आधारित है — बीच से शुरू करने पर 'कनेक्टिंग नोट्स' (जैसे 'विस्तार से देखें अध्याय X') समझने में कठिनाई हो सकती है।
2. हुक स्टोरी को गंभीरता से पढ़ें: हर अध्याय की शुरुआती कहानी केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि उस अध्याय की मूल अवधारणा को याद रखने का सबसे आसान ज़रिया है — इसे न छोड़ें।
3. तालिकाओं व बॉक्स को हल्के में न लें: हर तालिका, उदाहरण-बॉक्स व महत्वपूर्ण-तथ्य बॉक्स को ध्यान से पढ़ें — परीक्षा में प्रत्यक्ष प्रश्न इन्हीं से बनते हैं।
4. मानचित्र स्वयं भरें: हर अध्याय में दिए गए रिक्त मानचित्रों को हाथ से भरने की आदत डालें (नदियाँ खींचना, जिले चिह्नित करना) — यह दीर्घकालिक स्मृति (Long-term Memory) के लिए सबसे प्रभावी तरीका सिद्ध हुआ है।
5. अपनी परीक्षा के अनुसार जोर दें: यदि आप REET की तैयारी कर रहे हैं तो ऊर्जा संसाधन व यातायात जैसे पूरक विषयों पर अतिरिक्त ध्यान दें (देखें अनुभाग 6); यदि RAS Mains है तो हर अध्याय के अंत में मौजूद 'RAS Mains उत्तर-लेखन कोण' वाले बॉक्स को विशेष रूप से पढ़ें।
6. दोहराव से बचें, संदर्भ का उपयोग करें: यदि किसी अध्याय में कोई तथ्य पहले पढ़ा जा चुका है, तो पुस्तक में दिया गया 'क्रॉस-रेफरेंस' नोट देखें, ताकि समय बचे और पूरी तस्वीर स्पष्ट रहे।

संदर्भ स्रोत

इस पुस्तक को तैयार करने में विश्वसनीयता व सटीकता सुनिश्चित करने हेतु निम्नलिखित प्रामाणिक स्रोतों का उपयोग किया गया है:

- ◆ राजस्थान आर्थिक समीक्षा (नवीनतम संस्करण) — कृषि, पशुधन, खनिज, जनसंख्या व अर्थव्यवस्था संबंधी आधिकारिक आँकड़े
- ◆ भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) — जियो-हेरिटेज स्थल व खनिज संबंधी जानकारी
- ◆ जनगणना 2011 एवं संबंधित नवीनतम अनुमान — जनसंख्या, साक्षरता, लिंगानुपात संबंधी आँकड़े

- ◆ RPSC व RSMSSB के आधिकारिक पाठ्यक्रम दस्तावेज़ (RAS Pre 2026, SI, REET, CET) — पाठ्यक्रम-विश्लेषण हेतु
- ◆ राजस्थान सरकार के संबंधित विभाग (कृषि, वन, खान एवं भूविज्ञान, पर्यटन, जनजातीय क्षेत्रीय विकास आदि) — योजनाओं व नवीनतम अपडेट हेतु
- ◆ विश्वसनीय समाचार व शैक्षणिक स्रोत — 2025-26 की ताज़ा घटनाओं व आँकड़ों हेतु

RAS

RPSC के नए सिलेबस के अनुसार COMPLETE PRE & MAINS तैयारी

सही रणनीति • बेहतर सामग्री • पक्का चयन



By Omkar Sir

RAS

FOUNDATION COURSE

PRE + MAINS COMPLETE PREPARATION

- VIDEO LECTURES**
Chapterwise HD Video Classes
- PDF NOTES**
Detailed PDF Notes
- QUIZ PRACTICE**
Topicwise MCQ Quiz
- SHORT NOTES**
Exam Oriented Short Notes
- ANSWER WRITING**
Mains Answer Writing Practice

बेस मजबूत, तैयारी संपूर्ण, चयन निश्चित!

RAS

PRELIMS SUPER 60

60 दिन का TASK BASED STUDY PROGRAM

- 60 DAYS TASK PLAN**
Day-wise Study Plan & Tasks
- VIDEO LECTURES**
Targeted Video Classes
- PDF NOTES**
Chapterwise PDF Notes
- QUIZ PRACTICE**
Daily & Sectional Quiz
- SHORT NOTES**
Quick Revision Notes

60 दिन की रणनीति, प्रीलिम्स पार पक्का!



RPSC
Rajasthan Public
Service Commission

आपका लक्ष्य
RAS

हमारा संकल्प
आपकी सफलता!



FREE

RAS FREE TEST SERIES

अपनी तैयारी को दें सही परख!

कुल 18 TEST

RPSC PATTERN के अनुसार टेस्ट

COMPLETE SYLLABUS COVER

DETAILED SOLUTION के साथ

PERFORMANCE ANALYSIS

कुल 18 TESTS

14 SUBJECT WISE + 4 FULL LENGTH



कोर्स से जुड़ने के लिए
आज ही डाउनलोड करें

NEW INDIA
NAV BHARAT NIRMAN **APP**

अधिक जानकारी के लिए

www.omkarsir.in **7023166962**

☀ क्या आप जानते हैं?

जरा कल्पना कीजिए — भारत के नक्शे में एक ऐसा राज्य है जो अकेला ही देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग दसवां हिस्सा घेरता है। इतना बड़ा कि अगर आप इसके एक छोर (धौलपुर) में सूर्योदय देख रहे हों, तो दूसरे छोर (जैसलमेर) में सूरज को उगने में अभी लगभग 36 मिनट और लगेंगे! यही है राजस्थान — भारत का सबसे बड़ा राज्य, जिसका नाम भी एक लंबी यात्रा से होकर गुजरा है — वैदिक काल में इसे 'ब्रह्मवर्त' कहा गया, रामायण-महाभारत काल में 'मरुकांतार' (दुर्गम रेगिस्तान), अंग्रेजों के समय 'राजपूताना', और अंततः 1829 में कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी किताब में पहली बार लिखित रूप में 'राजस्थान' नाम दिया। लेकिन क्या आपको पता है कि आज़ादी के समय राजस्थान एक नहीं, बल्कि 19 अलग-अलग रियासतों, 3 ठिकानों और 1 केंद्रशासित क्षेत्र में बंटा हुआ था, और इन सबको जोड़कर आज का राजस्थान बनाने में पूरे 7 चरण और 8 साल 7 महीने 14 दिन लगे? आइए, इस अध्याय में हम राजस्थान की इस पूरी पहचान — इसके नामकरण, उत्पत्ति, एकीकरण, वर्तमान जिलों-संभागों की बनावट, इसकी सटीक भौगोलिक स्थिति, विस्तार और क्षेत्रफल — को विस्तार से, सरल भाषा में समझेंगे।

📋 विषय-सूची (Index)

1. राजस्थान का परिचय एवं नामकरण (Introduction & Naming)
2. राजस्थान की भौगोलिक उत्पत्ति (Geological Origin)
3. राजस्थान का एकीकरण (Integration of Rajasthan)
4. राजस्थान के जिले — ऐतिहासिक विकास एवं वर्तमान स्वरूप (Districts — History & Present)
5. राजस्थान की स्थिति, अक्षांश एवं देशान्तर (Location, Latitude & Longitude)
6. कर्क रेखा — Tropic of Cancer
7. राजस्थान का विस्तार एवं क्षेत्रफल (Extent & Area)
8. राजस्थान की आकृति एवं सीमाएँ (Shape & Boundaries)
9. पड़ोसी राज्य एवं सीमावर्ती जिले (Neighbouring States & Border Districts)
10. संभागीय व्यवस्था (Divisional System)
11. राजस्थान के उपनाम एवं विशिष्ट तथ्य (Nicknames & Special Facts)
12. नवीनतम अपडेट 2025-26 (Latest Updates — Population, Voters, Rajasthan Day)
13. त्वरित पुनरावृत्ति एवं सारांश (Quick Revision)

1. राजस्थान का परिचय एवं नामकरण (Introduction & Naming)

किसी भी राज्य को गहराई से समझने के लिए सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि उसका नाम कहाँ से आया और समय के साथ यह कैसे बदलता गया। राजस्थान का नाम भी हजारों सालों की यात्रा से गुजरकर आज के रूप में पहुँचा है। नीचे दी गई तालिका में हर काल (period) में राजस्थान को किस नाम से जाना जाता था, यह क्रमवार दिखाया गया है — जैसे किसी व्यक्ति का बचपन का नाम अलग हो और बड़े होकर नाम बदल जाए, ठीक वैसे ही राजस्थान की भी कई पहचान रही हैं।

1.1 राजस्थान के ऐतिहासिक नाम (Historical Names)

काल (Period)	नाम (Name)	स्रोत / विशेष (Source / Note)
वैदिक काल (ऋग्वेद)	ब्रह्मवर्त	ऋग्वेद में उल्लेख — आर्यों की पवित्र सांस्कृतिक भूमि मानी जाती थी
रामायण काल	मरुकांतार	वाल्मीकि रामायण में उल्लेख — मरु (रेगिस्तान) + कांतार (दुर्गम वन/भूभाग)
महाभारत काल	मरुकांतार	महाभारत ग्रंथ में भी इसी नाम का उल्लेख मिलता है
मध्यकाल	राजस्थान (भौगोलिक अर्थ में नहीं)	मुहणौत नैणसी की ख्यात एवं राजरूपक ग्रंथ में उल्लेख, परंतु यह आज जैसा भौगोलिक नाम नहीं था
1800 ई.	राजपूताना	जॉर्ज थॉमस — इस शब्द का सर्वप्रथम मौखिक (verbal) प्रयोग किया
1829 ई.	राजस्थान (लिखित रूप में)	कर्नल जेम्स टॉड — इस नाम का प्रथम लिखित (written) प्रयोग किया



समझने का आसान तरीका

सोचिए — जैसे किसी बच्चे का घर में प्यार का नाम अलग होता है और स्कूल/सरकारी दस्तावेज़ों में अलग नाम दर्ज होता है, वैसे ही राजस्थान भी वैदिक काल में 'ब्रह्मवर्त' (धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान), रामायण-महाभारत काल में 'मरुकांतार' (भौगोलिक कठिनाई की पहचान — मरुस्थल व दुर्गम भूभाग), और अंग्रेजों के दौर में 'राजपूताना' (राजपूत रियासतों की भूमि) कहलाया। अंतिम और स्थायी नाम 'राजस्थान' (राजाओं का स्थान) कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी किताब में सबसे पहले लिखित रूप में दर्ज किया — और यही नाम आज तक चला आ रहा है।

कर्नल जेम्स टॉड (Colonel James Tod) — विशेष जानकारी

- ◆ उपनाम: 'घोड़े वाले बाबा' — क्योंकि वे घोड़े पर बैठकर पूरे राजपूताना क्षेत्र में घूमे और जानकारी इकट्ठा की
- ◆ प्रसिद्ध पुस्तक: The Annals and Antiquities of Rajasthan (1829 ई.) — यह पुस्तक राजस्थान के इतिहास पर सबसे प्रामाणिक (authentic) प्रारंभिक स्रोतों में से एक मानी जाती है
- ◆ अन्य नाम: Central and Western Rajput States of India
- ◆ इस पुस्तक में तीन नामों का प्रयोग किया गया: रायथान (Raithan), रजवाड़ा (Rajwara), और राजस्थान (Rajasthan) — अंततः 'राजस्थान' नाम ही स्थायी रूप से स्वीकार हुआ
- ◆ पुस्तक का हिंदी अनुवाद गौरीशंकर हीराचंद ओझा द्वारा किया गया
- ◆ जेम्स टॉड को 'इतिहास लेखन का पितामह' (Father of Rajasthan History Writing) भी कहा जाता है

ध्यान रहे: 'राजपूताना' शब्द को औपचारिक रूप से आधुनिक अर्थ में सबसे पहले जॉर्ज थॉमस (1800 ई.) ने प्रयोग किया, जबकि 'राजस्थान' शब्द का प्रथम लिखित प्रयोग कर्नल जेम्स टॉड (1829 ई.) ने किया। परीक्षा में अक्सर इन दोनों नामों और व्यक्तियों को आपस में उलझा दिया जाता है — इसलिए वर्ष और व्यक्ति दोनों याद रखें।

1.2 राजस्थान की भौगोलिक स्थिति — एक नजर में (At a Glance)

इससे पहले कि हम अक्षांश-देशांतर जैसी तकनीकी बातों में जाएँ, यह समझना ज़रूरी है कि राजस्थान पृथ्वी के किस बड़े हिस्से में स्थित है — भारत में कहाँ, और दुनिया के नक्शे में कहाँ।

मानक (Criteria)	स्थिति (Position)
भारत में स्थिति	उत्तर-पश्चिम भारत (North-West India)
विश्व में स्थिति	उत्तरी-पूर्वी गोलार्द्ध (Northern-Eastern Hemisphere)
अक्षांशीय स्थिति	उत्तरी गोलार्द्ध में (भूमध्य रेखा/Equator के उत्तर में)
देशान्तरीय स्थिति	पूर्वी गोलार्द्ध में (ग्रीनविच रेखा/Prime Meridian के पूर्व में)
एशिया में स्थिति	दक्षिण-पश्चिमी एशिया (South-West Asia)

2. राजस्थान की भौगोलिक उत्पत्ति (Geological Origin)

राजस्थान आज जैसा दिखता है — पश्चिम में रेगिस्तान, बीच में अरावली पहाड़ियाँ, पूर्व में उपजाऊ मैदान — यह अचानक नहीं बना। इसके पीछे करोड़ों वर्षों की भूगर्भीय (geological) प्रक्रिया है। इसे समझने के लिए सबसे पहले वैज्ञानिक अल्फ्रेड वेगनर के 'महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत' (Continental Drift Theory) को समझना होगा।

2.1 अल्फ्रेड वेगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत

- ♦ सिद्धांत प्रतिपादक: Alfred Wegener (अल्फ्रेड वेगनर) — एक जर्मन वैज्ञानिक जिन्होंने 1912 में यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि आज के सभी महाद्वीप कभी एक ही बड़े भूखंड का हिस्सा थे
- ♦ पैंजिया (Pangea): इसका अर्थ है 'सम्पूर्ण भूमि' — यानी वह एक विशाल महाद्वीप जिसमें आज के सभी महाद्वीप जुड़े हुए थे
- ♦ पैंथालासा (Panthalassa): पैंजिया के चारों ओर फैला विशाल महासागर, यानी उस समय के सभी महासागरों का मिला-जुला रूप — इसका सबसे बड़ा हिस्सा आज का प्रशांत महासागर (Pacific Ocean) है, जो कुल पैंथालासा का लगभग 46% भाग रखता था

पैंजिया के दो भाग

भाग (Part)	नाम (Name)	शामिल महाद्वीप (Included Continents)
उत्तरी भाग	अंगारा लैंड / लॉरेशिया (Laurasia)	उत्तरी अमेरिका, यूरोप, उत्तरी एशिया
दक्षिणी भाग	गोंडवाना लैंड (Gondwana Land)	दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिणी एशिया (भारत सहित), ऑस्ट्रेलिया, अंटार्कटिका

💡 टेथिस सागर (Tethys Sea) क्या है?

पैजिया के टूटने के दौरान अंगारा लैंड (उत्तर) और गोंडवाना लैंड (दक्षिण) के बीच एक लंबा, संकरा समुद्री गर्त बन गया था, जिसे 'टेथिस सागर' कहा जाता है — यह असल में एक भूसन्नति (Geosyncline) थी, यानी एक ऐसा गहरा गड्ढा जिसमें नदियों द्वारा लाई गई तलछट (sediment) लगातार जमा होती रही। लाखों वर्षों में यही तलछट दबकर और मुड़कर आज का हिमालय पर्वत, उत्तर का विशाल मैदान और थार का मरुस्थल बनी। यानी हिमालय और राजस्थान का रेगिस्तान — दोनों की जड़ें एक ही समुद्र (टेथिस सागर) में हैं, बस समय के साथ इनका रूप बदल गया।

2.2 राजस्थान के भौतिक प्रदेशों की उत्पत्ति

क्रम	भौतिक प्रदेश (Physical Region)	उत्पत्ति (Origin)	भारत में वर्गीकरण
1	अरावली पर्वतीय प्रदेश (सबसे प्राचीन)	गोंडवाना लैंड से	प्रायद्वीपीय पठार (Peninsular Plateau) का भाग
2	हाड़ौती का पठार	गोंडवाना लैंड से	प्रायद्वीपीय पठार का भाग
3	थार का मरुस्थल	टेथिस सागर के अवसादों से	उत्तर के विशाल मैदान का भाग
4	पूर्वी मैदानी प्रदेश (सबसे नवीन)	टेथिस सागर के अवसादों से	उत्तर के विशाल मैदान का भाग

याद रखने की सरल तरीका: प्राचीनता के क्रम में (सबसे पुराना → सबसे नया): अरावली पर्वत → हाड़ौती का पठार → थार का मरुस्थल → पूर्वी मैदानी प्रदेश। यानी अरावली पर्वत राजस्थान की सबसे पुरानी और पूर्वी मैदानी प्रदेश सबसे नई भौगोलिक रचना है।

3. राजस्थान का एकीकरण (Integration of Rajasthan)

आज हम राजस्थान को एक अखंड, एकीकृत राज्य के रूप में देखते हैं, लेकिन आज़ादी के समय (1947) यह क्षेत्र दर्जनों छोटी-बड़ी रियासतों में बंटा हुआ था — हर रियासत का अपना राजा, अपना प्रशासन। इन सभी बिखरे हुए टुकड़ों को जोड़कर एक राज्य बनाना एक बहुत बड़ी और जटिल राजनीतिक प्रक्रिया थी, जिसे 'राजस्थान का एकीकरण' कहा जाता है।

3.1 स्वतंत्रता के समय की स्थिति (1947)

इकाई का प्रकार	संख्या	नाम / विवरण
रियासतें (Princely States)	19	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, किशनगढ़, टोंक, बूंदी, कोटा, झालावाड़, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, उदयपुर, शाहपुरा, सिरोही
ठिकाने (Estates)	3	लावा, कुशलगढ़, नीमराणा
केन्द्रशासित प्रदेश	1	अजमेर-मेरवाड़ा (British India के अधीन सीधा शासित क्षेत्र)

3.2 एकीकरण के प्रमुख नेता

- ◆ सरदार वल्लभभाई पटेल (Sardar Vallabhbhai Patel) — भारत के गृहमंत्री, जिन्हें उनकी दृढ़ता के कारण 'लौह पुरुष' (Iron Man of India) कहा जाता है। रियासतों के विलय की पूरी प्रक्रिया का नेतृत्व इन्होंने ही किया
- ◆ वी.पी. मेनन (V.P. Menon) — रियासती विभाग (States Department) के सचिव, जिन्हें एकीकरण की व्यावहारिक योजना बनाने और उसे अमल में लाने का सूत्रधार माना जाता है

कुल समय: सम्पूर्ण एकीकरण प्रक्रिया में 8 वर्ष 7 माह 14 दिन का समय लगा और यह कुल 7 चरणों में पूरी हुई — 18 मार्च 1948 से शुरू होकर 1 नवम्बर 1956 को अंतिम रूप से पूर्ण हुई।

3.3 राजस्थान एकीकरण के 7 चरण (7 Phases of Integration)

चरण	संघ का नाम	तिथि	सम्मिलित क्षेत्र	विशेष तथ्य
I	मत्स्य संघ (Matsya Union)	18 मार्च 1948	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली	नाम के.एम. मुंशी के सुझाव पर रखा गया
II	पूर्व राजस्थान संघ	25 मार्च 1948	9 रियासतें + कुशलगढ़ ठिकाना	राजधानी — कोटा
III	संयुक्त राजस्थान	18 अप्रैल 1948	पूर्व राजस्थान + उदयपुर रियासत	उद्घाटन पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा
IV	वृहद् राजस्थान (Greater Rajasthan)	30 मार्च 1949	संयुक्त राजस्थान + जयपुर + जोधपुर + जैसलमेर + बीकानेर	इसी दिन को 'राजस्थान दिवस' के रूप में मनाया जाता है, राजधानी जयपुर बनी
V	संयुक्त वृहद् राजस्थान	15 मई 1949	वृहद् राजस्थान + मत्स्य संघ	शंकरदेव राय समिति की सिफारिश पर हुआ विलय
VI	राजस्थान संघ	26 जनवरी 1950	सिरोही रियासत (आबू-देलवाड़ा क्षेत्र को छोड़कर)	यह भारत के गणतंत्र बनने का दिन भी है
VII	वर्तमान राजस्थान	1 नवम्बर 1956	आबू-देलवाड़ा + अजमेर-मेरवाड़ा + सुनेल टप्पा (सिरोज क्षेत्र मध्यप्रदेश को स्थानांतरित)	राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 के अंतर्गत — इस समय 26 जिले बने